बिन्दु से सिन्धु

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

बिन्दु–बिन्दु के मेल से सागर बन जाता है। बिन्दु का कोई अस्तित्व नहीं है किन्तु परस्पर बिन्दुओं के मिलने से जलधारा का निर्माण हो जाता है। सागर से यदि एक–दो बिन्दु को निकाल दिया जाए तो बिन्दु अपना अस्तित्व खो देती है। कल–कल बहती हुई नदियां समुद्र में मिलने के पश्चात् अपने नाम रूप को छोड़ देती हैं। समुद्र में मिलने के पश्चात् उनका अस्तित्व विलीन हो जाता है। सड़क के किनारे पड़ा हुआ पत्थर कोई मूल्य नहीं रखता किन्तु जब उस पत्थर को तरासकर मन्दिर में देवता के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है तो करोड़ों लोगों का आराध्यदेव बन जाता है। शक्ति एक में नहीं समूह में है, इससे यह बात सिद्ध होती है। सच्चा गुरु ज्ञान का प्रतीक है। वह शिष्य के अज्ञान को दूर करके उसके भीतर ज्ञान का प्रकाश भर देता है।

जो पिण्ड में है वही ब्रह्माण्ड में है। ब्रह्माण्ड पूरा सृष्टि कहलाता है। इसे लोक भी कहते हैं। पिण्ड बिन्दु है और ब्रह्माण्ड सिन्धु है। लोक में प्राणी निवास करते हैं। लोक से परे अलोक है वहां प्राणी निवास नहीं कर सकते। वहां केवल स्पेश है। वहां आक्सीजन नहीं है। इसलिए वहां प्राणी नहीं रह सकते। ब्रह्माण्ड पंचभूतात्म है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश से ब्रह्माण्ड बना है। यहां असंख्य जीव निवास करते हैं। यहां पर जड़ और चेतन दो मूल तत्व हैं। चेतन तत्व अपरिवर्तनशील है और जड़ तत्व परिवर्तनशील है। जड़ गलन मिलन धर्मा है। इसे पुद्गल कहते हैं। अध्यात्मवादी छः द्रव्यों को मानते हैं और भौतिकवादी पंचमहाभूतों को मानते हैं। छठा प्रमुख तत्व आत्मा है। आत्मा सच्चिदानन्द है। आत्मा से सभी तत्व संचालित होते हैं। जड़ से सुख–दुख की अनुभूति नहीं होती। चेतन और जड़ के संयोग से सृष्टि चलती है।

शरीर जड़ और चेतन का मिश्रण है। जड़ ओर चेतन दोनों विजातीय द्रव्य हैं। आत्मा चेतन और अरूप है। शरीर अचेतन और सरूप। दोनों का संबंध कैसे हो सकता है? संसारी आत्मा सूक्ष्म और स्थूल इन दो प्रकार के शरीरों से आवेष्टित रहता है। एक जन्म से दूसरे जन्म में जाने के समय स्थूल शरीर छूट जाता है, सूक्ष्म शरीर नहीं छूटता।

सूक्ष्म शरीर धारी जीवों को एक के बाद दूसरे–तीसरे स्थूल शरीर का निर्माण करना पड़ता है। सूक्ष्म शरीर धारी जीव ही दूसरा शरीर धारण करते हैं। इसलिए अमूर्त्त जीव मूर्त्त शरीर में कैसे प्रवेश करते हैं यह प्रश्न ही नहीं उठता। संसारी दशा में जीव कथंचित् मूर्त्त भी है। उसका अमूर्त्त रूप विदेह दशा में प्रगट होता है। संसारी दशा में जीव और पुद्गल का कथंचित् सादृश्य होता है। शरीर और चेतना दोनों भिन्न धर्मक है।

फिर भी इनका अनादि संबंध है। चेतन और अचेतन चैतन्य की दृष्टि से भिन्न हैं। इसलिए वे एक नहीं हो सकते, किन्तु सामान्य गुण की दृष्टि से वह अभिन्न भी हैं। इसलिए उनमें संबंध हो सकता है।

चेतन शरीर का निर्माता है। शरीर उसका अधिष्ठान है। इसलिए दोनों पर एक दूसरे की क्रिया–प्रतिक्रिया होती है। शरीर की रचना चेतन विकास के आधार पर होती है। चेतना विकास के अनुरूप शरीर की रचना होती है। शरीर रचना के अनुरूप चेतना की प्रवृत्ति होती है। शरीर निर्माण काल में आत्मा उसका निमित्त बनती है।

आत्मा शरीर से सर्वथा भिन्न नहीं होती इसलिए आत्मा की परिणति का शरीर पर और शरीर की परिणति का आत्मा पर पड़ता है। देहमुक्त होने के बाद आत्मा पर शरीर का कोई प्रभाव नहीं होता, किन्तु दैहिक स्थितियों में जकड़ी हुई आत्मा के क्रियाकलाप में शरीर सहायक और बाधक बनता है। जड़ पदार्थ में हलन–चलन नहीं होता। जैसे पत्थर लकड़ी या अन्य निर्जीव पदार्थ एक जगह रखे जाते हैं तो उसमें गति नहीं होती है। जड़ पदार्थ चेतन भाव से रहित होता है, इसलिए उसे जड़ कहा जाता है। वस्तु के हलन–चलन को गतिशीलता कहा जाता है।

धर्म आत्मा का लक्षण है, गुण है। जो धारण करता है या धारण करने की शक्ति जिसमें होती है वह धर्म है। गुणों का आचरण में आना आवश्यक है। धर्म बहुत ही व्यापक शब्द है। इसके अंतर्गत भावों की शुद्धता, मन की निर्मलता और सात्विक विचार का अधिक महत्व है। धर्म मूलतः किसी वस्तु का सहज गुण है। इसी प्रकार जितने भी पदार्थ हैं, उन सबका स्वाभाविक धर्म होता है। जब पदार्थों में विकृति उत्पन्न की जाती है तो उनके गुण धर्म भी बदल जाते हैं। आत्मा एक ऐसा तत्व है जिसमें किसी प्रकार की विकृति नहीं आती है। यह अपने स्वरूप में चैतन्य युक्त है।

आत्मा और जड़ का जब संयोग होता है तो जड़ पदार्थ भी आत्मवत् प्रतीत होने लगता है। शरीर जड़ है और आत्मा चेतन। शरीर से जब आत्मा का संयोग होता है तो जड़ शरीर भी आत्मवत् प्रतीत होने लगता है। शरीर से अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कार्य किये जाते हैं। मूलतः आत्मा के शुद्धि और अशुद्धि का कोई प्रश्न नहीं है। शरीर में शुद्धता और अशुद्धता देखी जाती है। यदि मानव अच्छा कर्म करता है तो पुण्यलोक की प्राप्ति होती है और यदि बुरा कार्य करता है तो उसे नरक की प्राप्ति होती है। बिन्दु सिन्धु में मिलने के पश्चात् सिन्धु का रूप धारण कर लेती है। इसी प्रकार आत्मा भी कर्म तन्तुओं को तोड़कर परमात्मा बन जाती है।